The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति

Dr. Prishila Soren

Ph.D., Political Science, Sido Kanhu Murmu University, Dumka, Jharkhand

Email: sonasoren48@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17120291

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 19-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

कौटिल्य, विजीगीषु, राज्य, राजनीति, शक्ति, मंडल सिद्धांत, अन्तर्राष्ट्रीय

ABSTRACT

राजनीति एक ऐसा विषय है, जिससे कोई भी मनुष्य अछूता नहीं है। आम आदमी राजनीति का अर्थ लगाते समय एक छोटे से दायरे के बारे में सोचता है। वह इसे केवल मंत्रियों और विधायको की गतिविधि समझ लेता है। या इसे राजनीतिज्ञों की चालबाजियों और चुनाव के पैतरों के साथ जोड़ने लगता है। अरस्तु प्लेटो तथा समकालीन विद्धानों ने राजनीति को राज्य से जोड़कर परिभाषित करने का प्रयास किया। यूनानी विचारक यह मानते है कि राज्य मनुष्य के जीवन को चलाने के लिए अस्तित्व में आया है और सद्जीवन की सिद्धि के लिए बना रहता है। अरस्तू ने कहा था कि ''मनुष्य स्वभाव से राजनीतिक प्राणी है।'' अरस्तू ने राजनीति को 'सर्वोच्च विज्ञान' का दर्जा दिया था। राजनीति की आधुनिक धारणा के अनुसार राजनीति मनुष्य की स्वभाविक गतिविधि है। मनुष्यों की गतिविधि विभिन्न समूहों के माध्यम से व्यक्त होती है जैसे– राजनीतिक दल, हित समूह तथा दबाव समूह इत्यादि। कुछ विद्धानों का मानना है राजनीति का सरोकार संघर्ष और उसके समाधान से है। डेविड ईस्टन के अनुसार राजनीतिक का संबंध समाज में मूल्यों का आधिकारिक आवंटन से है। राष्ट्रों के मध्य की जानेवाली राजनीति को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति कहा जाता है। जॉर्ज कैटलिन, मैकसबेवर, लासवेल तथा रार्बट डहल आदि विद्धानों ने अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को संघर्ष के रूप में देखा है। मॉरगेन्थाउ ने राष्ट्रों का अंतिम लक्ष्य शक्ति प्राप्ति माना है। कौटिल्य ने तत्कालीन समय के राजनीति का अध्ययन कर मंडल सिद्धांत का प्रतिपादन किया था। मंडल सिद्धान्त 12 राज्यों के समूह पर आधारित था। उन 12 राज्यों की स्थिति उस

समय कौटिल्य ने जिस स्थान पर रखी थी वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में भी कमोवेश वही स्थिति नजर आती है।

उद्देष्य :–

इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य मंडल सिद्धांत का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना और वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में इसकी प्रासांगिकता को उजागर करना है। साथ ही विश्व शांति एवं राष्ट्रों के मध्य शक्ति संतुलन को प्रभावित करने वाले कारक अथवा संगठनो की भूमिका का अध्ययन किया जाएगा।

परिचय :–

कौटिल्य ने राज्य को अपने आप में साध्य मानते हुए सामाजिक जीवन में सर्वोच्च स्थान दिया है। धर्म एवं नैतिकता के प्रति उनका दृष्टिकोण रूढ़िवादिता से परे है। राज्य हित को उन्होने सर्वोपरि रखा है। कौटिल्य ने 'अर्थशास्त्र' की रचना की। अर्थशास्त्र के संबंध में कई विद्धानों ने अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये है। के0 पी0 जयसवाल (हिन्दु पॉलिटी) के अनुसार कौटिल्य के विचार से अर्थ का तात्पर्य – ऐसी भूमि या क्षेत्र से है जिस पर मनुष्य बसे हों। अतः अर्थशास्त्र वह संहिता है, जो भूमि अर्जित करने और उसकी अभिवृद्धि करने के उपायों का निरूपण करती है।1 आधुनिक युग में अर्थशास्त्र का प्रयोग 'इकॉनॉमिक्स' (Economics) के अर्थ में करते है परन्तु कौटिल्य के अर्थशास्त्र के विवेचन का विषय पॉलिटिक्स अर्थात् राजनीति शास्त्र है। यह प्रशासक के लिए मार्गदर्शिका का काम करता है। यह युद्ध एवं शांति दोनों ही स्थिति में पैदा होने वाली व्यवहारिक समस्याओं की ध्यान में रखते हुए प्रशासक के लिए उपयुक्त कार्यों एवं नीतियों का विवेचन करता है। यह कुटनीति की विधियों पर भी प्रकाश डालता है। अर्थशास्त्र को 15 अधिकरणों और 150 अध्यायों में विभक्त किया गया है। जिसमें 180 विषयों पर लगभग 6,000 शलोक है।2 भारतीय राजनीति के जनक कौटिल्य ने राजा अथवा प्रभुसत्ताधारी की उत्पत्ति के संबंध में सामाजिक अनुबंध सिद्धांत का अनुशरण किया है। राज्य को सही ढंग से चलाने के लिए कौटिल्य ने दो महत्वपूर्ण सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। सप्तांग सिद्धांत और मंडल सिद्धान्त। सप्तांग सिद्धांत के अनुसार राज्य के सात अंग सात प्रकृतियाँ है जो उसके विभिन्न अंगो का निर्माण करती है। पहला अंग राजा या स्वामी, दुसरा अंग आमात्य, तीसरा अंग जनपद, चौथा अंग दुर्ग, पाँचवाँ अंग कोष, छठा अंग दण्ड तथा सातवाँ अंग मित्र है। ये सात अंग या प्रकृति मिलकर राजनीतिक संतुलन बनाये रखते है।

कौटिल्य का मण्डल सिद्धांत :–

राज्य के प्रशासन में सुरक्षा और विदेश संबंधों के संचालन का विशेष महत्व है। कौटिल्य ने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों के संचालन हेतु मण्डल सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। तत्कालीन भारत छोटे–छोटे टुकड़े में विभक्त था। कौटिल्य का उद्देश्य इन राज्यों को सुसंगठित एवं सुदृढ़ बना कर एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना करना था।

अतः उन्होंने कुशल शासक की संकल्पना विजीगीषु के रूप में की। विजीगीषु ऐसा शासक है, जो विजय की कामना करता है। अर्थात् राज्यों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करके अपने राज्य का विस्तार करना चाहता है कौटिल्य के अनुसार युद्ध में संल्पित होना राज्य के लिए स्वभाविक और अनिवार्य है। अतः विजीगीषु को युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए शूरवीर और निपुण होना है। उनमें अपने मित्र और शत्रु की सही पहचान करने की क्षमता होनी चाहिए।

कौटिल्य के अनुसार विजीगीषु राज्य का सीमावर्त्ती राज्य उसका स्वभाविक शत्रु होता है। इसी तर्क के आधार पर शत्रु राज्य का सीमावर्ती राज्य उस राज्य का शत्रु होता है। शत्रु का शत्रु उस राज्य का मित्र होता है। जो राज्य विजीगीषु उसके शत्रु दोनों देशों की सीमाओं से लगा हो, वह इनमें से किसी का भी शत्रु या मित्र हो सकता है। उसे मध्यम (Intermediate) कहा जाता है। यह इन दोनों में से किसी भी पक्ष के साथ संधि कर सकता है, या संधि तोड़ सकता है। जो राज्य विजीगीषु और इसके शत्रु की सीमाओं से परे हो, वह न तो स्वभावतः हन दोनों में से किसी का न तो शत्रु होता है और न मित्र। उसे उदासीन (Neutral) कहा जाता है। वह अपनी या अपने विवेक से किसी भी राज्य से संधि कर सकता है, या संधि तोड़ सकता है।

अर्थषास्त्र के अनुसार राज्यमंडल की संरचना3

(Structure of the State System according to Arthashastra)

		12. अरिमित्र मित्र		
		9. मित्रमित्र		
		8. अरिमित्र		
		5. मित्र		
		2. अरि		
4. उदासीन	3. मध्यम	1. विजिगीषु	3. मध्यम	4. उदासीन
		6. पार्ष्णिग्राह		
		1. आक्रंद		
		10. पार्ष्णिग्राहासार		
		11. आक्रंदासार		

मण्डल सिद्धांत बारह राज्यों का समूह है जो इस प्रकार है 1. विजीगीषु 2. अरि 3. मित्र 4. अरिमित्र 5. मित्र–मित्र 6. अरिमित्र–मित्र 7. पार्ष्णिग्राह 8. आक्रंद 9. पार्ष्णिग्राह–सार 10. आक्रंदासार 11. मध्यम 12. उदासीन। भौगोलिक दृष्टिकोण से विजीगीषु मध्य में स्थित होता है, और मित्र, अरिमित्र, और अरिमित्र–मित्र ये राज्य विजीगीषु के सम्मुख होते है तथा पार्ष्णिग्राह, आक्रंदा, पार्ष्णिग्राहसार, एवं आक्रंदासार विजीगीषु राज्य के पृष्ठ भाग में होते हैं। शेष दो राज्य मध्यम तथा उदासीन उसके एक–एक तरफ होते है। कौटिल्य इन बारह राज्यों का चरित्र चित्रण निम्न प्रकार से किया है।4

1. विजीगीषु :– अपने राज्य की सीमाओं का विस्तार करने का आकांक्षी राज्य विजीशीषु कहलाता है। यह मंडल का केन्द्र होता है।
2. अरि :– विजीगीषु राज्य की सीमा पर स्थित राज्य उसका शत्रु राज्य होता है।
3. मित्र :– अरि राज्य के सामने का राज्य मित्र राज्य होता है क्योंकि वह अरि राज्य का शत्रु होने के कारण स्वाभाविक रूप से विजीगीषु का मित्र राज्य होता है।
4. अरिमित्र :– मित्र के आगे वाला राज्य अरिमित्र होता है, क्योंकि वह अरि का मित्र और विजीगीषु का शत्रु होता है।
5. मित्र–मित्र :– अरिमित्र के सामनेवाला राज्य मित्र–मित्र राज्य होता है क्योंकि वह मित्र राज्य का मित्र होता है अतः विजीगीषु का भी मित्र होता हैं।
6. अरिमित्र–मित्र :– अरिमित्र–मित्र राज्य अरिमित्र राज्य का मित्र राज्य होता है। अतः वह विजीगीषु का शत्रु राज्य होता है।
7. पार्ष्णिग्राह :– विजीगीषु के पृष्ठ में स्थित राज्य पार्ष्णिग्राह कहलाता है। यह राज्य भी अरि राज्य की तरह विजीगीषु का शत्रु राज्य होता है।
8. आक्रंद :– पार्ष्णिग्राह राज्य के पीछे स्थित राज्य आक्रंद कहलाता है। आक्रंद राज्य विजीगीषु का मित्र राज्य होता है।
9. पार्ष्णिग्राहसार :– पार्ष्णिग्राहसार राज्य पार्ष्णिग्राह का मित्र राज्य होता है तथा आक्रंद राज्य के पृष्ट भाग पर स्थित होता है। यह विजीगीषु का शत्रु होता है।
10. आक्रंदासार :– पार्ष्णिग्राहसार के पीछे स्थित राज्य आक्रंदासार राज्य कहलाता है। यह राज्य आक्रंद का मित्र होने के कारण विजीगीषु का भी मित्र होता है।
11. मध्यम :– मध्यम राज्य ऐसा राज्य होता है जो विजीगीषु और अरि दोनों ही प्रकार के राज्यों की सीमाओं से पृथक स्थित राज्य होता है तथा दोनों से अधिक शक्तिशाली होता है तथा आवश्यकता होने पर वह इन दोनों में से किसी की सहायता कर सकता है और दोनों का मुकाबला भी कर सकता है।

12. उदासीन :– उदासीन राज्य का प्रदेश विजीगीषु, अरि एवं मध्यम राज्य की सीमाओं से पृथक होता है। वह अति शक्ति सम्पन्न होता है और अपनी इच्छानुसार इन तीनों में से किसी की भी आवश्यकता होने पर सहायता कर सकता है।

विजीगीषु, उसके मित्र, शत्रु, मध्यम और उदासीन के संयोग से चार समूहों या मंडलों का निर्माण होता है।5

i. प्रथम मण्डल :– इसमें स्वयं, विजीगीषु, उसके मित्र और उसके मित्र और उसके मित्र का मित्र सम्मिलित है।

ii. द्वितीय मण्डल :– इसमें विजीगीषु का शत्रु, शत्रु का मित्र और शत्रु के मित्र का मित्र सम्मिलित है।

iii. तृतीय मण्डल :– इसमें मध्यम, उसका मित्र और उसके मित्र का मित्र सम्मिलित है।

iv. चतुर्थ मण्डल :– इसमें उदासीन उसका मित्र और उसके मित्र का मित्र सम्मिलित है।

इन चारों मण्डलों के संयोग से वृहद् राज्यमण्डल की रचना होती है। चूँकि प्रत्येक मंडल में तीन–तीन राज्य आते है, इसलिए वृहद् राज्य मण्डल में बारह आ जाते है। इन्हें राज्य प्रकृतियाँ कहा जाता है। कौटिल्य का मानना है कि विजीगीषु को मंडलों की सही–सही पहचान करके उनमें उपयुक्त शक्ति संतुलन (Balance of Power) स्थापित करना चाहिए। उसे यह ध्यान रखना चाहिए कि उसके शत्रुओं और उसके सहायकों की सम्मिलित शक्ति उसकी अपनी और अपने सहायकों की शक्ति से आगे न बढ़ पाए। राज्य की नीति का ध्येय, शक्ति और सम्पदा अर्जित करना है। कौटिल्य ने विदेश संबंधों के संचालन के लिए छह प्रकार की नीतियों का विवरण दिया हैः– 1. संधि 2. विग्रह 3. यान 4. आसन 5. संश्रय 6. द्वैधीभाव।

अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति और कौटिल्य का मण्डल सिद्धान्त :–

'राजनीति' मूलतः संस्कृत शब्द है। इसमें इसका अर्थ राजा की नीति है, किन्तु वर्तमान समय में इस शब्द का जिस अर्थ में प्रयोग होता है, वह उससे भिन्न है और अधिक व्यापक है। मैक्स बेबर, जॉर्ज कैटलिन, हेरॉल्ड लासवेल तथा रॉबर्ट डहल आदि विचारकों ने राजनीति को संधर्ष के रूप में देखा है। जॉर्ज कैटलिन के मतानुसार, ''समस्त राजनीति स्वभावतः शाक्ति और संघर्ष से संबंधित है।'' सामान्य तौर पर राष्ट्रों के मध्य पायी जाने वाली राजनीति को अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की संज्ञा दी जाती है। किवन्सी राइट के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में राज्यों के कुछ समूह होते है, जिनकी अपनी–अपनी आवश्यकताएँ, इच्छाएँ अभिलाषाएँ होती है। इन्हें राष्ट्रीय हित कहा जाता है। प्रत्येक राज्य का अपने राष्ट्रीय हित के संवर्धन करने के क्रम में अन्य राष्ट्रों के साथ इसके मतभेद और विवाद उत्पन्न होते हैं। उन्हें शांतिपूर्वक रीति से कूटनीति द्वारा हल करने का प्रयत्न किया जाता है। यदि यह इस रीति से हल न हो सके तो विवाद का सामाधान शक्ति द्वारा किया जाता है। अतः अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति एक ऐसी प्रक्रिया है, जिसमें प्रत्येक राष्ट्र शक्ति के माध्यम से अपने अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों को इस प्रकार व्यवस्थित करता है कि इससे उसे अधिक से अधिक लाभ हो और उसके राष्ट्रीय हितों की वृद्धि हो। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की मुख्य कुंजी राष्ट्रीय हित है,

जिसे केवल शक्ति के परिपेक्ष्य में देखा जाता है। मॉरगेन्थाउ के शब्दों में ''अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, प्रत्येक राजनीति की भांति शक्ति संघर्ष है। अन्तर्राष्ट्रय राजनीति का अन्तिम लक्ष्य चाहे कुछ भी हो शक्ति सदैव तात्कालिक उद्देश्य रखती है।''6

कौटिल्य के मंडल सिद्धांत का मुख्य पात्र विजीगीषु है। इसी के इर्द–गिर्द मंडल सिद्धांत की रचना की गई है। इस सिद्धान्त के अनुसार, विजीगीषु के निकटतम सीमावर्ती राज्य उसका शत्रु होता है। यह स्थिति वर्तमान परिदृश्य में भी सत्य साबित होता है। उदाहरण स्वरूप भारत के निकटतम सीमावर्ती राज्य पाकिस्तान तथा चीन दोनों ही भारत के शत्रु राज्य है। इजराइल देश के सीमावर्ती देश सीरिया, फिलिस्तिन, लेवनान तथा मिश्र शत्रु राज्य ही है, इजराइल का इन देशों के साथ मित्रता का संबंध नहीं बन पाया है। कौटिल्य ने मण्डलों के मध्य शक्ति संतुलन बनाए रखने की बात की है जो वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के लिए एक अहम् मुद्दा है। कौटिल्य ने विजीगीषु के द्वारा शक्ति और धन अर्जित करने की बात है, वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की भी अमूमन यही स्थिति है, प्रत्येक सम्प्रभु राज्य शक्तिशाली बनने की होड़ में लगे हुए है। चाहे वह आर्थिक शक्ति हो मानवशक्ति हो या आण्विक शक्ति। कौटिल्य ने मण्डल सिद्धान्त में शामिल राज्यों के समूहों के अतिरिक्त इन राज्यों से बनने वाले समूहों की भी चर्चा की है। वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में कई सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक तथा सैनिक संगठनों का अस्तित्व है जैसे–संयुक्त राष्ट्र संघ, यूरोपियन यूनियन WTO, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, विश्व स्वास्थ संगठन, नाटो, सार्क, ओपेक, दक्षेस, आशियान, ब्रिक्स, जी–20 इत्यादि। ये संगठन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक है।

निष्कर्ष :–इस शोध पत्र के माध्यम से कहा जा सकता है कि कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित मंडल सिद्धांत की प्रासांगिकता वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति में बनी हुई है। पहली बात, यह सिद्धांत बताता है कि राष्ट्र को शक्तिशाली होना चाहिए और निरंतर शक्ति और धन को अर्जित करते रहना चाहिए। अतः एक सम्प्रभु राष्ट्र के लिए अपने राष्ट्रीय हित को बढ़ाना तथा शत्रु की पहचान कर रणनीति तैयार करना अत्यावश्यक है। दूसरा इस सिद्धान्त के माध्यम से विश्व शांति तथा राष्ट्रों के मध्य शक्ति संतुलन को रेखांकित किया है, जो वर्तमान अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की दृष्टिकोण से काफी महत्वपूर्ण है। तीसरा यह सिद्धान्त प्रतिपादित करता है कि एक राज्य की सीमा पर स्थित राज्य उसके शत्रु होते है, परन्तु वर्तमान समय में यह कथन उचित प्रतीत नहीं होता है, जैसे भारत की सीमा पर स्थित सभी देश शत्रु नहीं है। चीन तथा पाकिस्तान ही इसके शत्रु देश है, इनके अतिरिक्त, भारत का नेपाल, भूटान तथा बंग्लादेश से संबंध सौहार्दपूर्ण रहा है। इस प्रकार हम देखते है कि कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित मंडल सिद्धांत का आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति पर व्यापक प्रभाव दिखाई पड़ रहा है।

संदर्भ सूची :–

1- Gauba, O.P, ''राजनीति–विचारक विश्वकोश'', मयूर पेपर बैक्स, एस0 आर0 बी0 43 ए0 शिप्रा रिवेरा ज्ञानखण्ड 3 इंदिरापुरम 201014, पेज नं0–154

2- तथैव, पेज नं0–155

3- तथैव, पेज नं0–53

4- जैन पुखराज, ''राजनीति विज्ञान; साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा0) लि0, प्रशा0 कार्या0 34, लाजपत कुंज, आगरा–282002, पेज नं0–45

5- Gauba, O.P, ''राजनीति–विचारक विश्वकोश'' मयूर पेपर बैक्स, एस0 आर0 बी0 43ए0 शिप्रा रिवेरा, ज्ञानखण्ड 3, इंदिरा पुरम 201014, पेज नं0–161

6- जैन, डॉ0 पुखराज एवं फाड़िया, डॉ बी0 एल0, ''Political Science'', साहित्य भवन पब्लिकेशन्स,